International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 146-148

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 146-148
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-03-2018
Accepted: 27-04-2018

कौशल्या चौहान
शोध-निर्देशक, संस्कृत-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, भारत

पद्मा ठाकुर
शोधार्थी, पीएच.डी. संस्कृत-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, भारत

Correspondence
कौशल्या चौहान
शोध-निर्देशक, संस्कृत-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, भारत

वैदिक नदी असिक्नी की उपादेयता

कौशल्या चौहान, पद्मा ठाकुर

सारांश
नदियों की उपादेयता मानव जीवन में बहुत अधिक है। जल तो जीवन है, जल के बिना प्राणिजगत जीवित नहीं रह सकता। इसीलिए मनुष्य उन स्थानों पर निवास करता है जहाँ वातावरण और जीवकोपार्जन के उपयुक्त संसाधन हों। इसके लिए नदियों के तट सबसे अनुकूल हैं। नदियाँ सदियों से इतिहास, राजनीति, धर्म और अर्थ का केन्द्र रहीं हैं।

कुट शब्दः वैदिक नदी असिक्नी, उपादेयता

प्रस्तावना
वैदिक साहित्य में जल एवं नदियों की देवता के रूप में स्तुति की गई है।[1] ऋग्वेद में जल से जगत् की उत्पत्ति बतलाई गई है। जल हमारा पालक, उत्पन्न करने वाला, विशेष रूप से जगत् को धारण करने वाला और पोषण करने वाला है। यही विश्व के सारे धामों, लोकों और उत्पन्न होने वाले पदार्थों तथा समस्त देवों को उनके स्थान पर रखने वाला है। यह अद्वितीय जल तत्त्व द्युलोक, पृथिवी-लोक तथा देव और असुरों से भी परे सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वग्राहक है। सम्पूर्ण विश्व को सर्वप्रथम इसी ने धारण किया था।[2] इसी धारणा का वहन करते हुए जल को सृष्टि का प्रारम्भिक रूप बतलाया गया है।[3]
जल से ही ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। उसी से ओम्[4] तथा भू, भुवः, स्वः की उत्पत्ति[5] हुई। आदित्य, समुद्र और सहस्त्रों नदियाँ उस जल के गर्भ से उत्पन्न हुई मानी गई हैं।[6] ऋग्वैदिक नदियों में गंगा, यमुना, सरस्वती, शुतुद्रि, परुष्णि, मरुद्वृधा, वितस्ता, सुषोमा, आर्जीकिया तथा असिक्नी नदी की स्तुति की गई हैं।[7] वैदिक कालीन नदियों की गणना में असिक्नी एक प्रमुख नदी है।

असिक्नी शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ
असित् शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय [8] के विधान के अनुसार क्न आदेश[9] से असिक्नी शब्द की व्युत्पति हुई है। यास्कानुसार यह अशुक्ला, असिता है। सितम् शब्द श्वेतवर्ण का पर्यायवाची है। अतः इसका प्रतिषेध असितम् के द्वारा

---

[1] अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिगम्व नस्कृधि।। ऋ0, 2.41.16
[2] यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवानानि विश्वा।
यो देवानां नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या।।
तमिङ्गर्भ प्रथमं दध्र आपो यत्र देवा समगच्छन्त विश्वे।
अजसय नामावध्येकमर्पितं यस्मिन् श्वानि भुवनानितस्थुः।। वही, 10.83.3-6
[3] पूर्वमेकार्णवे घोरे नष्टे स्थावरजङ्गमे।
बृहदण्डमभूदेकं प्रजानां बीजसंभवम्।। वा0पु0, 43.17
[4] विशुद्धसलिले तस्मिन्विज्ञायान्तर्गतं जगत्।
अण्डं विभज्य भगवांस्मादोमिव्यजायत्।। वही, 43.31
[5] ततो भूरभवत्तस्माद्भुव इत्यपरः स्मृतः।
स्वः शब्दश्च तृतीयोऽभूर्भुवः स्वेति संज्ञिताः।। वही, 43.32
[6] कठिन्याद्धरिणी ज्ञेया भूतानां धारिणी हिसा।
यस्मिन्स्थाने स्थितं ह्यण्डं तस्मिन्सन्निहितं सरः।।
तस्योल्बं मेरूरज्जरायुः पर्वताः स्मृताः।
गर्भोदक समुद्राश्च तथा नद्यः सहस्त्रशः।। वही, 43.36-37
[7] इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्यां मरुद्वृधे वितस्तयाऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया।। ऋ., 10.75.5
[8] टिड्-ढाडण्-अञ्-द्वयसच्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वर पः, पा0 व्या0, 4/1/15
[9] छन्दसि क्नमेके, (वा0) 2454, सिद्धान्तकौमुदी, पृ0, 553

निर्दिष्ट है।[10] असिक्नी शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। वेदों तथा पुराणों में असिक्नी शब्द रात्रि, औषधि, पंचजनी, दक्ष की पत्नी, श्याम, काली तथा कृष्णसर्पिणी इत्यादि अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

असिक्नी नदी ही चन्द्रभागा

वेदों में वर्णित असिक्नी नदी ही चन्द्रभागा के नाम से व्यवहृत होती है। वर्तमान में यह नदी चिनाब नाम से अभिहित है। विपाशा-शतद्रू-इरावती-चन्द्रभागा-वितस्ता इन पाँच नदियों के साथ सिन्धु छठी नदी है। ये पाँच नदियाँ पञ्चनद अर्थात् पंजाब प्रान्त को सींचती हैं। ये पाँच नदियाँ जब सिन्धु प्रदेश में मिलती है तभी सिन्धुसम्भेद कहलाती है।[11] महाभारत काल में असिक्नी नदी का नाम चन्द्रभागा प्रचलित हो गया था। भारतवर्ष के लोग अनेक नदियों का जल पीते हैं, जिनमें चन्द्रभागा नदी का भी वर्णन मिलता है।[12] श्रीमद्भागवत पुराण में चन्द्रभागा और असिक्नी दोनों का नाम एक ही स्थान में हैं।[13] ऐसा प्रतीत होता है कि इसी नदी की ऊपरी भाग को चन्द्रभागा कहकर, पुनः शेष नदी का प्राचीन वैदिक नाम असिक्नी कहा गया है।

चन्द्रभागा शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

चन्द्रभाग एक पर्वत विशेष है। चन्द्रभाग पर्वत विशेष से चन्द्रभागा शब्द की निष्पति होती है।[14] चन्द्रभागा शब्द से टच्[15] तथा टाप् प्रत्यय [16] करके चन्द्रभागा शब्द की व्युत्पत्ति होती है।

अमरकोषकार के अनुसार भी चन्द्रभागा चन्द्रभाग पर्वत से व्युत्पन्न है।[17] मानक हिन्दी कोषानुसार चन्द्रभाग से अच् तथा टाप् (आ) प्रत्यय करके चन्द्रभागा शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।[18]

चन्द्रभागा नदी की उत्पत्ति

चन्द्रभाग हिमालय पर्वत का वह भाग है जिसमें से चन्द्रभागा या चिनाब नदी निकलती है। पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में बहने वाली प्रसिद्ध नदी चनाब का पुराना नाम उसके चन्द्रभाग नामक हिमालय के एक शिखर से निकलने के कारण पड़ा था।[19] हिमाचल के अन्तर्गत चन्द्रभाग एक पर्वत है, जिस पर ब्रह्मा ने देवताओं और पितरों के निमित्त चन्दमा के भाग किए थे। यहीं से चन्द्रभागा नदी का उद्गम भी है।[20] कालिका पुराण के अनुसार एक प्रसङ्ग प्राप्त होता है कि चन्द्रदेव को दिए गए शाप से छुटकारा पाने के लिए विधाता ने चन्द्रभागा नदी की रचना की थी।[21]

चन्द्रभागा नदी की उपादेयता

नदियाँ अपने जल प्रवाह में मानव सभ्यता का इतिहास संजोए हुए है। नदी-पर्वत आदि की प्राकृतिक सीमाओं में अनेक जनपदों का विस्तार फैला हुआ था। वाल्मीकि युगीन भारत में वर्णित है कि यह चन्द्रभागा नदी भारत के उत्तर में विद्यमान थी, जो कैकय और भद्र जनपद के मध्य प्रवाहित होती थी। आधुनिक सन्दर्भ में यह चिनाब नदी कहलाती है।[22] पाणिनिकालीन भारतवर्ष के अनुसार भद्र जनपद बहुत बड़ा था। पाणिनि के समय में भद्र जनपद दो भागों में बंटा था - पूर्वभद्र और उत्तरभद्र। रावी से झेलम तक भद्र जनपद का विस्तार था। बीच की चिनाब नदी उसे दो भागों में बांटती थी। स्वभावतः झेलम और चिनाव के बीच का पश्चिमी भाग अपरभद्र (आजकल का गुजरात ज़िला) और चिनाब एवं रावी के बीच का भाग पूर्वभद्र (आधुनिक स्यालकोट और गुजरांवाला ज़िला) कहलाता था। भद्र जनपद की राजधानी शाकल (वर्तमान स्यालकोट) थी।[23] पंतञ्जलिकालीन भारतानुसार भी पूर्व (पूर्वी) भद्र रावी से चेनाब तक और अपर (पश्चिमी) भद्र चेनाब से झेलम तक फैला था।[24] केकय, उशीनर और भद्र तीनों बाहीक के ही भाग प्रतीत होते हैं, इनमें केकय, झेलम और चेनाब के बीच में, भद्र चेनाब और रावी के मध्य में उत्तरी भाग में तथा उशीनर दक्षिण भाग में था।[25] ऋग्वेद में शिवि नामक जाति विशेष का वर्णन मिलता है। इनका विषय (अधिकृत प्रदेश) शिवयः या शैवदेश कहलाता था।[26] इस जाति का सुदास के साथ युद्ध का वर्णन मिलता है। वह लोग अत्यधिक वीर थे।[27] ग्रीक लेखकों ने इन्हें सिबइ या सिबोइ कहा है और अकेसाइन्स (ऋ0 असिक्नी) या चन्द्रभागा और सिन्धु के मध्यवर्ती देश के निवासी बतलाया है। शिवियों की राजधानी शिवपुर थी।[28] पुराणों में वर्णित है कि म्लेच्छों की भूमि सिन्धु नदी से लेकर चन्द्रभागा नदी के किनारे तक और कौंतीपुरी काश्मीर आदि देशों तक व्यापत रही।[29] विष्णु पुराण से ज्ञात होता है कि चन्द्रभागा नदी का तटवर्ती प्रदेश पूर्व गुप्तकाल में म्लेच्छों तथा यवन-शक आदि द्वारा शासित रहा था।[30] सुन्दर ढंग से वर्णित प्राचीन काल के अनेक व्यवहारों से परिपूर्ण राजतरङ्गिणी में चन्द्रभागा नदी राजा रणादित्य और रणाम्भा देवी के प्रसङ्ग में वर्णित है राजा रणादित्य, रणाम्भा देवी द्वारा प्रदत्त हाटकेश्वर मन्त्र की साधना के पश्चात् विविध शुभ स्वप्नों एवं दैवी चमत्कारों को देखकर वह दृढ़निश्चयी राजा चन्द्रभागा नदी का भेदन कर नमुचि दैत्य की कन्दरा में चले गए।[31] राजतरङ्गिणी में अन्यत्र वर्णन आता है कि तूलमूल्य ग्राम अपहरण के पश्चात् राजा को राजा जयापीड़ के प्रजापीड़न से, ब्राह्मणों को दुःख देने और प्राणियों की हत्या में संलग्न होने से दुःखी ब्राह्मणों की नदी में डूबकर मरने की खबर चन्द्रभागा नदी के तट पर मिली।[32] यूनानी सम्राट् मेनाण्डर तथा बौद्ध-भिक्षु नागसेन के मध्य संवादों के आधार पर लिखे प्रथम शती के बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्दपञ्हपालि' में इस नदी (चन्द्रभागा) का उल्लेख हिमालय पर्वत से निकलने वाली प्रमुख तथा बड़ी नदियों में किया गया है। मेण्डकपञ्ह के एक प्रसङ्ग में वर्णित है कि हिमालय पर्वत से पाँच सौ नदियाँ निकलती हैं, उनमें से केवल गङ्गा, यमुना, अचिरवती सरयू, मही, सिन्धु, सरस्वती, वेत्रवती, वीतसां तथा चन्द्रभागा इन दस नदियों की गणना की गई है।[33] मध्यदेश के राजा ज्यल्लादीन की कश्मीरविजय की इच्छा थी। इसी प्रसङ्ग के अन्तर्गत ऐतिहासिक चन्द्रभागा नदी के तट पर राजा की सेना का वर्णन प्राप्त होता है।[34] सेना द्वारा कुछ

---

[10] असिकन्यशुक्लसिता सितमिति वर्णनाम तत्प्रतिषेधो ऽसितम्।। निरु0, 9.3.21

[11] चन्द्रभागा असिक्नी व्यवहृता, तयैवालक्षेन्द्रो न्यग्रहीत। नद्या वर्तमाने चिनाब इत्यभिधा पप्रथे। विपाशा-शतद्रू-इरावती-चन्द्रभागा-वितस्तेति नदिपञ्चकेन सह सिन्धु षष्ठयः। पञ्चनदः पञ्चनदं (पञ्जाबप्रान्तम्) सिञ्चन्ति। पञ्चनद्यो यत्र सिन्धप्रदेशे सम्मिलन्ति तदेव सिन्धुसंभेद इत्याख्यायते। अमरकोषस्य वातायनात् (नामलिङ्गनुशासनम्), द्वितीय अध्याय।

[12] शतद्रुं चन्द्रभागां च यमुनां च महानदीम्।
दृषद्वती विपाशां च विपापां स्थूलवालुकम्।। महा0, 6.9.15

[13] शतद्रूश्चन्द्रभागा मरुद्वृद्धा वितस्ता -
असिक्नी विश्वेति महानद्यः।। भाग0पु0, 5.19.18

[14] चन्द्रभागात् पर्व्वतविशेषात् जाता इति वा। नदीविशेषः चन्द्रभागा। शब्दकल्पद्रुम, द्वितीयो भागः, पृष्ठ, 428

[15] अर्श आदिभ्यो टच्। पा0 व्या0, 5/2/127

[16] अजाऽऽद्यतष्टाप्। वही, 4/1/4

[17] चन्द्रभागा चन्द्रभागयोः पर्वतयोरियम्। अमरकोष, 1.10, पृष्ठ, 135

[18] मानक हिन्दी कोश, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ, 186

[19] मानक हिन्दी कोश, द्वितीय खण्ड पृष्ठ, 186, नालन्दा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ, 353

[20] पौराणिक कोश, पृष्ठ, 164

[21] चन्द्रस्य शापमोक्षार्थं चन्द्रभागा नदी यथा।
स्त्रृष्टा धत्रा तदैवात्र मेधातिथिरूपस्थितः।। कालि0पु0, 22.94

[22] वाल्मीकि युगीन भारत, पृष्ठ, 54

[23] पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृष्ठ, 57

[24] वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृष्ठ, 42

[25] वही, पृष्ठ, 100

[26] वही, पृष्ठ, 97

[27] आ पक्थासो भलानसो भनन्ताऽलिनासो विषाणिनः शिवासः
आ योऽनयत् सधमा आर्यस्य गत्या तृत्सुभ्यो अजगन् युधानृन्। ऋ0, 7.18.7

[28] पतञ्जलिकालीन भारत, पृष्ठ, 97

[29] सिन्धोस्तटं चन्द्रभागां कौन्तीं काश्मीरमण्डलम्।
भोक्ष्यन्ति शूद्रा वात्याद्या म्लेच्छाश्चान्ध्रवर्चसः।। भा0पु0, 12.1.37

[30] सिन्धु दार्विकोर्गी चन्द्रभागाकाश्मीर।
विषयाश्चव्रात्यम्लेच्छशूद्रादयो भोक्ष्यन्ति।। वि0पु0, 4.23.69

[31] स्वप्नैश्च सिद्धिलिंगैश्च जाताभङ्गुरनिश्चयः।
चन्द्रभागाजलं भित्त्वा नमुचेः प्राविशाद्विलम्।। राज0, 3.468

[32] तूलमूल्यापहर्ता च चन्द्रभागातरे स्थितः।
विप्राणां शतमेकोनमशृणोत्तजले मृतम्।। वही, 4.638

[33] महाराज,हिमवन्ता पढबता पञ्च नदीसतानि सन्दन्ति, तेसं,
महाराज, पञ्चन्तं नदीसतानं दसेव नदीगणनाय गणीयन्ति,
सेय्यथीदं - गङ्गा, यमुना, अचिरवती, सरयू, मही, सिन्धु,
सरस्वती, वेत्रवती, वीतंसा, चन्द्रभागा। मिलिन्दपञ्हपालि, मेण्डकपञ्हो, इद्धिबलवग्गो, पथविचलनपञ्हो, 4/1/5

[34] स्नानत्रस्तचलद्वाजिभतिचञ्चलमानवे।
चन्द्रभागातटे दूरादुपहासः कृतोऽभवत्।।। शुक तर0, 217

दिनों में चन्द्रभागा नदी को पार कर काश्मीर देश को प्राप्त करने का भी उल्लेख मिलता है।[35]

गरुड़ पुराण में चन्द्रभागा का तीर्थ के रूप में वर्णन किया गया है कि महाकेशी, कावेरी, विपाशा, एकाग्र, ब्रह्माण, देवकोटक तथा चन्द्रभागा ये सब महान् तीर्थ हैं।[36] चन्द्रभागा नदी के तट पर तपस्वियों द्वारा यज्ञ किए जाने का भी वर्णन मिलता है। पुराणों में चन्द्रभागा नदी के तट पर तपस्वियों के आश्रय में मेधातिथि द्वारा महायज्ञ के किए जाने का उल्लेख मिलता है।[37] सुत्तपिटक के विल्लियत्थेर अपदान में भी अनेक बौद्ध तपस्वियों का इस नदी के तट पर तपस्या किए जाने का प्रसंग मिलता है।[38]

नदियों को समाज एवं संस्कृति की जननी कहा जाता है। नदियों से समबन्धित साहित्य पढ़कर आज भी लोग अपने प्राचीन समाज के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। नदियों के तट पर सभ्यताएँ पनपती हैं और विकसित होती हैं। चन्द्रभागा नदी के तट पर किन्नर-किन्नरियों (देवयोनियों) के निवास का तथा उनके द्वारा किए जाने वाले भिन्न-भिन्न क्रिया-कलापों का वर्णन सुत्तपिटक के खुद्दकानिकाय में प्राप्त होता है।[39] काश्मीर के इतिहास में चन्द्रभागा नदी के तट पर स्वर्ण से मिश्रित उपलखण्डों की प्राप्ति का वर्णन मिलता है।[40] बौद्ध ग्रन्थ सुत्तपिटक में चन्द्रभागा नदी के तीर में मृगों, मछलियों के प्राप्त होने का वर्णन मिलता है।[41] अतः स्पष्ट होता है कि दूर अतीत में चन्द्रभागा नदी की ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक उपादेयता रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. ऋग्वेद, भाष्यकारः श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, प्रकाशकः बसन्त श्रीपाद सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, (जि0 बलसाड), संस्करणः 1985
2. पाणिनीय व्याकरण, सम्पादक : पण्डित हरिशङ्कर पाण्डेय, प्रकाशकः शिवालिक प्रकाशन 27/16, शक्तिनगर, दिल्ली-7, संस्करणः 2006
3. महाभारत, लेखकः महर्षि वेदव्यास, सम्पादकः डॉ0 मण्डन मिश्र, प्रकाशकः नाग पब्लिशर्स 11।/V.A. जहवाहर नगर, दिल्ली-7, संस्करण, 1988
4. मिलिन्दपञ्हपालि, सम्पादक एवं अनुवादकः शास्त्री स्वामिद्वारिकादास, प्रकाशकः बौद्ध भारती पो0बा0 1049, वाराणसी-1, संस्करण : द्वितीय, 1990
5. वामन पुराण, सम्पादकः वेदमूर्ति तपोनिष्ट पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशकः संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब, बरेली (उ0प्र0), संस्करण : 1971
6. कालिका पुराण, सम्पादकः श्री विश्वनारायण शास्त्री, प्रकाशकः चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, गोपाल मन्दिर, वाराणसी - 1, संस्करणः प्रथम - 1972
7. वाल्मीकि युगीन भारत, सम्पादकः डॉ0 मंजुला जयसवाल, प्रकाशकः महामति प्रकाशन 59, बहादुरगंज, इलाहाबाद
8. पंतजलिकालीन भारत, सम्पादकः डॉ0 प्रभुदयाल अग्निहोत्री, प्रकाशकः बिहार राष्ट्रभाषा - परिषद्, पटना-4
9. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, सम्पादकः वासुदेव शरण अग्रवाल, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज, चौखम्बा, वाराणसी - 1
10. सुत्तपिटक, प्रकाशकः विपश्यना विशोधन विन्यास धम्मगिरि, इगतपुरी महाराष्ट - 422403, भारत
11. कल्हण राजतरङ्गिणी, सम्पादकः श्री रामतेजशास्त्री पाण्डेय, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 36 यू0ए0, जवाहर नगर, बंग्लो रोड, दिल्ली-110007
12. अमरकोश, लेखकः अमरसिंह, सम्पादकः विश्वनाथ झा, प्रकाशकः दिल्ली मोती लाल बनारसी दास, संस्करणः प्रथम 1969
13. नालंदा विशाल शब्द सागर, लेखकः श्री नवल, सम्पादकः आदीश बुक डिपो 38, यू0ए0 दिल्ली-7, संस्करण-1954
14. मानक हिन्दी कोश, लेखकः रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक : साहित्य रत्नमाला कार्यालय, 20 धर्मकूप, वाराणसी

---

[35] चन्द्रभागां समुल्लङ्घय दिनैः स्वल्पतैरपि।
पर्वतस्यान्तिकं प्राप सेना काश्मीरदेशगा।। वही, 219

[36] महाकेशी च कावेरी चन्द्रभागा विपाशया।
एकाग्रञ्च तथा तीर्थ ब्रह्माणं देवकोटकम्।।
मथुरा च पुरी रम्या शोणश्चैव महानदः।। गरुडपु0, 44.11

[37] हुत प्रज्वलिते वह्नौ न चिरात् क्रियतां त्वया।
एतच्छैलोपत्यकायां चन्द्रभागानदीतटे।। कालि0पु0, 22.86

[38] चन्दभागानदीतीरे, अस्समो सुकतो मम।
विल्लखरुक्खेहि आकिण्णो, नानादुमनिम्नेवितो। सुत्तपिटक, खुद्दकनिकाय, विल्लियत्थेर अपदान, 45.3.15, पृष्ठ, 25

[39] चन्दभागानदीतीरे, अहोसिं किन्नरी तदा। अद्दसं विरजं बुद्धं, सयम्भुं अपराजितं। पसन्नचिता सुमना, वेदजाता कतञ्जली। नलमालं गहेत्वान, सयम्भु अभिपूजयिं। जहित्वा किन्नरीदेहं, तावतिंसमगच्छहं खुद्दकनिकाये, परमत्थदीपनी, थेरगाथा-अट्टकथा, नलमालिकाथेर अपदानं, पृष्ठ, 198

[40] काश्मीरे प्रायः सर्वत्र लौहं प्राप्यते। तत्र चन्द्रभागा नदी तटे स्वर्णरौप्यमिश्रिता उपलखण्ड उपलभ्यन्ते। काश्मीरेतिहासः, पृष्ठ, 27-28

[41] चन्दभागानदीतीरे, वसामि अस्समे अहं।
सुवण्णमिगमद्दक्खिं, चरन्तं विपिने अहं।। वही, मन्दारवपुप्फियवग्गो, तिमिरपुप्फियत्थेर अपदानं, 33.5.28